नारी-आंदोलन में गीतों की भूमिका

'जागोरी' समूह

तोड़ तोड़ कर बंधनों को देखो बहनें आती हैं
ओ देखो लोगो देखो बहनें आती हैं
आएंगी, जुल्म मिटाएंगी,
वो तो नया ज़माना लाएंगी

औरतों के साथ औरतों के सवालों पर काम करने की शुरुआत जब की तो उन माध्यमों को पहचानने की भी ज़रूरत पड़ी जो औरतों के क़रीब हैं। हमने देखा कि सदियों से औरतें लोक गीतों के ज़रिए अपनी ज़िंदगी के दुख और परेशानियां, अपने हालात की कठोरता, अपनी अधूरी उमंगें और साथ ही अपनी खुशी, अपने सपनों का बयान करती आई हैं। समाज और रीति-रिवाजों के दबाव से घिरी औरतों के लिए अपनी बात कहने का ज़रिया गीत ही थे। सुबह-सवेरे चक्की चलाते, दूध बिलोते, धान-गेहूं काटते, बच्चों को सुलाते, शादी-ब्याह, त्यौहार-मेले; हर मौके पर गीत, संगीत हम औरतों के संग रहे हैं।

वैसे तो जन-आंदोलनों में भी लंबे अर्से से गीतों का इस्तेमाल होता आया है—पर औरतों के संदर्भ में ये सिर्फ़ औरतों का अपना माध्यम ही नहीं है बल्कि इस माध्यम में उन सब औरतों तक पहुंचने की क्षमता है जो पढ़ी लिखी नहीं हैं, घरों में अकेली पड़ गई हैं, बाहर की दुनिया से अनजान हैं। दूसरे संचार माध्यम एक तरह की सामूहिक भागीदारी मांगते हैं जो कि बहुत औरतों की ज़िंदगी में संभव नहीं है—पर गीत वे अकेले गा सकती हैं। यदि वे उन्हीं की भाषा में हों तो उनके शब्दों को अपनी ज़िंदगी से जोड़ सकती हैं—बदले विचारों और शब्दों पर अकेले और मिलकर कुछ सोच सकती हैं।

इसलिए नारी आंदोलनों के दौरान भी गीतों की एक खास भूमिका बन गई है—गीतों ने हम में एक नई चेतना पैदा की है और हमारी एकता, हमारी ताकत के एहसास को बढ़ाया है। अलग-अलग मुद्दों पर निकाले गए मोर्चों, धरनों, हमारे बनाए नाटकों, हमारे शिविरों और मीटिंगों में इन गानों ने जन्म लिया है।

जब हमने पहली बार अपने गानों की किताब और कैसेट निकाली तो हम नहीं जानते थे कि इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी——पर गानों की किताब चंद महीनों में बिक गई। सबसे खास बात तो यह है कि वे किताबें हर महिला कार्यकर्ता के झोले का एक ख़ास हिस्सा बन गईं। कैसेटों की मांग धीरे-धीरे बहुत बढ़ गई। हम इतना ही कह सकते हैं कि आज तक हमने करीब 3000 कैसेट बेची हैं। पहली कैसेट निकालते वक्त हमने एक छोटा सा अनुदान लिया था पर उसके बाद दोबारा पैसा कहीं से भी नहीं लेना पड़ा। दरअसल गानों की किताबें और कैसेट एक ऐसा प्रोजेक्ट है जो अपने पांव पर खड़ा है। उसे औरतों और कई पुरुष साथियों ने इतना अपना लिया कि अब तक हम गानों की 3 कैसेट निकाल चुके हैं जिनमें कुल मिलाकर करीब 50 गाने व कुछ कविताएं भी हैं।

दरिया की कसम मौजों की कसम
ये ताना बाना बदलेगा
तू खुद को बदल तू खुद को बदल
तब ही तो ज़माना बदलेगा

हम ये गीत तो हमेशा गाते ही रहे। दूर-दराज़ के गांवों तक इनकी गूंज पहुंच गई। साथ ही नये-नये गीत उभरने लगे। किसी अनपढ़ बहन ने अपना गीत

बना किसी पढ़ी-लिखी बहन को लिखाया तो किसी ने अपनी भाषा में कुछ बहुत ही सुंदर अपना रचा—यानी बहनों के लिए ये इतना अपना माध्यम था कि उन्हें देर न लगी इसे फिर नई तरह से इस्तेमाल करने में। अभी इन्हीं दिनों में महिला सामाख्या कार्यक्रम के अंतर्गत सखियों-सहयोगिनियों के गीतों व कविताओं का संकलन तैयार हुआ है। जब बहनें खुद जानी पहचानी लोक धुनों पर अपने गीत अपने मन के भाव लिखने लगीं तो उन शब्दों और प्रतीकों में एक अलग सोंधी खुशबू थी जैसे मिट्टी पर पहली बरखा के पड़ने से आती है। ये गीत औरतों को औरतों के और करीब ले गए।

कल-कल करती कहती गंगा
तुम भी धारा बन जाओ
राहें अलग अलग हैं अपनी
पर मंज़िल तो एक है
तुम सबको आंखों में बसाकर
बंद कर लीं अपनी आंखें
प्यार अलग-अलग है अपना
पर ठहराव तो एक है।

ख़ास बात तो यह है कि ये गीत हमारी मजबूरी का बयान नहीं हैं। इनमें तो समाज और अपने हालात को बदलने की ख्वाहिश, हर जुल्म का मुकाबला करने की ताक़त नज़र आती है। हमारी फ़नकारी, हमारी खुशी, हमारे सपने भी इन गीतों में झलकते हैं।

अब अन्य जगहों से भी नये-नये संकलन व कैसेट निकल रहे हैं—अपने-अपने इलाके की लोक धुनें, लोक संगीत व साजों के साथ। पाकिस्तान के महिला समूह "बेफ" के गीतों में जहां पंजाबी धुनों की गुनगुनाहट है तो बंबई में "वाचा" द्वारा निकले कैसेट में मराठी और गुजराती धुनों का प्रभाव है। हम गाने वालों की मंडली बढ़ती जा रही है। जब हम अपने सारे फ़र्कों को भूलकर मिलकर गीत गाते हैं तो एक बहुत ही सुंदर बहनचारे का समां बंधता है। □